हे नारी ! तुम ऐसी हो

हे शब्दों की शिल्पकार, तुम मूक भला क्यों बनती हो?
समझ न पाये गर ये जमाना,दोषी भला तुम क्यों बनती हो?
इन शोलों अंगारों की दुनिया में रहकर,
नहीं कोई अग्नि है तुममें समाई,
अगर भावना ज्वार का रूप लेगी,
भला गंगा बन सबकी तपत क्यों बुझाई?
अरे! खौफ मानव से तुमको है कैसा?
रचियता हो इनकी तुम ये क्यों भूल जाती!
नहीं ये विधाता कभी भी तुम्हारे,
नहीं रचना में वो दम करे जो तिरस्कृत,
असुर,सुर विजेता डरें क्यों किसी से?
फिर इन चिन्गारियों से क्यों भयभीत होना,
उठ कर खड़े हो निर्भीक होकर
नहीं रोक पायेगा कभी तुमको जमाना,
दायरों को मोड़ने की शक्ति है तुममें,
हर बंधनों को खोलने की युक्ति है तुममें,
लक्ष्मीबाई,रजिया को कौन रोक पाया था,
दुर्गा,काली को कौन रोक पायेगा?
गोविंद सिंह, शिवाजी, शंकर की रचयिता,
नहीं अबला कहीं भी,सर्व का संबल बनने वाली,
हिला दे जो गिरि को,झुका दे जो नभ को,
तुम अजेय शक्ति प्रचंड,क्यों पत्थरों से डरने वाली,
कहीं कोई शक्ति का याचक बनेगा,
कहीं कोई भक्त उपासक बनेगा,
तू अपनी उर्जा को खुद मान ले गर,
नहीं कोई तेरा फिर अराजक बनेगा,
ईश्वर ने अपनी शक्ति तेरे उर में समाई,
धरा सम धीरज सहन शक्ति समाई,
फिर तेरी गरिमा पर कैसे आंच आई?
नहीं भेंड़ बकरी हो तुम, शेर को वश में करने वाली,
इंसान तो क्या भगवान को भी मदद देने वाली,
हे नारी! तुम दाता हो,नहीं फरियादी बनने वाली,
क्या सबकी तुम दया पात्र हो? या हो दया लुटाने वाली?

ओम शान्ति सुमन बहन